

विस्तृत रूपरेखा

- I. पौलुस और सोस्थिनेस की ओर से अभिवादन (1:1-3)
- II. कलीसिया में व्याप्त समस्याएँ जिन पर ध्यान देने व सुधार की आवश्यकता है (1:4-6:20)
 - A. बुद्धिमान्नी व दलबन्दी कलह असंगत है (1:4-4:21)
 1. सब बातों में समृद्ध बनना (1:4-9)
 2. कलीसिया में दलबन्दी के विरुद्ध सलाह (1:10-17)
 3. परमेश्वर का ज्ञान (1:18-31)
 4. परमेश्वर के विषय सन्देश (2:1-16)
 - a. पौलुस के सन्देश का बचाव (2:1-5)
 - b. परमेश्वर का गुप्त और स्पष्ट ज्ञान (2:6-13)
 - c. सांसारिक और आत्मिक मनुष्य (2:14-16)
 5. दलबन्दी की गंभीरता (3:1-23)
 - a. दलबन्दी: शरीर का फल (3:1-9)
 - b. परमेश्वर का भवन; परमेश्वर का मन्दिर (3:10-17)
 - c. “सब वस्तुएँ तुम्हारी है” (3:18-23)
 6. पौलुस द्वारा अपना बचाव एवं नामंजूरी (4:1-21)
 - a. सेवकाई बनाम घमंडी निर्णय (4:1-5)
 - b. पौलुस बनाम दलबन्दी कुरिन्थियों (4:6-13)
 - c. पौलुस विश्वास में उनका “पिता” (4:14-21)
 - B. मसीह में आवश्यक नैतिक सत्यनिष्ठा (5:1-6:20)
 1. सहनशीलता एवं अविनाशिता (5:1-13)
 - a. पाप का पश्चाताप (5:1-5)
 - b. कलीसिया का शुद्धिकरण (5:6-8)
 - c. निर्देशों की स्पष्टता (5:9-13)
 2. पाप से बचाव (6:1-20)
 - a. मसीहियों में मुकद्दमेबाज़ी से दूर रहना (6:1-11)
 - b. व्यभिचार से दूर रहना (6:12-20)
- III. कलीसिया के सवाल के जवाब (7:1-16:18)
 - A. विवाह संबंधी सवाल (7:1-40)
 1. आसक्ति व स्वयं से इन्कार के संबंध में (7:1-7)

2. “अविवाहितों,” “विधवाओं,” व “विवाहितों” को सुझाव (7:8-11)
 3. एक विश्वासी के अविश्वासी के साथ विवाह में सुझाव (7:12-16)
 4. “जैसा परमेश्वर ने हर एक को बुलाया है” (7:17-24)
 5. कुरिन्थुस में अविवाहितों को निर्देश (7:25-40)
- B. मूर्तिपूजा व अन्य मुद्दों संबंधी प्रश्न (8:1-11:34)
1. मूर्तियों को चढ़ाया गया मांस और ज्ञान व उसकी सीमाएँ (8:1-13)
 2. पौलुस के द्वारा उदाहरण (9:1-27)
 - a. पौलुस के प्रेरिततीय अधिकार (9:1, 2)
 - b. पौलुस के व्यक्तिगत अधिकार (9:3-7)
 - c. एक की सेवा से लाभ (9:8-14)
 - d. अच्छा भण्डारी होना (9:15-18)
 - e. सबका सेवक (9:19-23)
 - f. लक्ष्य के लिए दौड़ (9:24-27)
 3. इतिहास से सबक (10:1-33)
 - a. “इस्राएल का स्मरण” (10:1-5)
 - b. “हमारे लिए उदाहरण” (10:6-13)
 - c. “मूर्तिपूजा से दूरी” (10:14-22)
 - d. न्यायसंगत व लाभदायक (10:23-30)
 - e. परमेश्वर की महिमा के लिए (10:31-33)
 4. आराधना में सिर ढाँकना (11:1-16)
 5. दिखावे की एकता की शर्मिन्दगी (11:17-22)
 6. प्रभु भोज (11:23-34)
- C. आत्मिक वरदानों से संबंधी प्रश्न (12:1-14:40)
1. एकता व आत्मिक वरदान (12:1-31)
 - a. “आत्मा के द्वारा बोलना” (12:1-3)
 - b. “वरदानों की विविधता” (12:4-11)
 - c. “देह एक है” (12:12, 13)
 - d. “देह एक, अंग अनेक” (12:14-26)
 - e. “महान वरदानों की इच्छा का आग्रह (12:27-31)
 2. प्रेम सबसे उत्तम मार्ग (13:1-13)
 - a. प्रेम का महत्व (13:1-3)
 - b. प्रेम की विशेषताएँ (13:4-7)
 - c. प्रेम की पैठ (13:8-12)
 - d. “विश्वास, आशा, प्रेम” स्थायी हैं (13:13)
 3. भविष्यद्वाणी, भाषाओं से सर्वोपरि (14:1-40)

- a. पौलुस की समझाइश (14:1-5)
 - b. पौलुस के उदाहरण (14:6-9)
 - c. पौलुस के द्वारा प्रस्तुति (14:10-12)
 - d. कलीसिया को उपदेश (14:13-19)
 - e. आराधना एवं समाज की जागरूकता (14:20-25)
 - f. आराधना में भाग लेने वालों को निर्देश (14:26-33)
 - g. आराधना में महिलाओं को निर्देश (14:34-36)
 - h. आराधना में सामान्य आराधको को निर्देश (14:37-40)
- D. मृतको के पुनरूत्थान संबंधी प्रश्न (15:1-58)
1. मसीह का पुनरूत्थान (15:1-11)
 2. खाली कब्र (15:12-19)
 3. कैसी देह? (15:20-28)
 4. एक बड़ा "क्यों?" (15:29-34)
 5. देहों के विभिन्न प्रकार (15:35-41)
 6. अन्तिम आदम (15:42-49)
 7. पुनरूत्थान का रहस्य (15:50-57)
 8. निष्कर्ष (15:58)
- E. अन्तिम मुद्दे (16:1-18)
1. तत्काल आवश्यकता व योजनाएँ (16:1-9)
 2. कुरिन्थुस की कलीसिया की सेवा (16:10-18)

IV. उपसंहार (16:19-24)